

## ६. हम उस धरती की संतति हैं

(पूरक पठन)

-उमाकांत मालवीय

### परिचय

**जन्म :** १९३१, मुंबई (महाराष्ट्र)

**मृत्यु :** १९८२, इलाहाबाद (उ.प्र.)

**परिचय :** भावों की तीव्रता और जन सरोकारों को रेखांकित करने वाले रचनाकारों में उमाकांत मालवीय का स्थान अग्रणी रहा। हिंदी साहित्य में आपको नवगीत का भगीरथ कहा जाता है। आपने कविता के अतिरिक्त खंडकाव्य, निबंध तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी लिखीं।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'मेंहदी और महावर', 'देवकी', 'रक्तपथ', 'सुबह रक्तपलाश की' (कविता संग्रह) आदि।

### पद्य संबंधी

**कव्वाली :** कव्वाली का इतिहास सात सौ वर्ष पुराना है। कव्वाली एक लोकप्रिय काव्य विधा है। यह तारीफ या शान में गाया जाने वाला गीत या कविता है।

प्रस्तुत कव्वाली में कवि ने दो दिलों की नोक-झोंक पेश करते हुए शूरवीर ऐतिहासिक स्त्री-पुरुष पात्रों का वर्णन किया है। यहाँ स्त्री-पुरुष को भारतमाता के रथ के दो पहिये बताया गया है। यहाँ गाते समय पहला पद लड़कों का समूह; दूसरा पद लड़कियों का समूह और अंतिम पद दोनों समूह मिलकर प्रस्तुत करते हैं।

हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें  
क्या कहिए; अजी क्या कहिए; हाँ क्या कहिए।

यह वह मिट्टी, जिस मिट्टी में खेले थे यहाँ ध्रुव-से बच्चे।

यह मिट्टी, हुए प्रहलाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे।  
शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते,  
जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते !

इस कारण हम तुमसे बढ़कर, हम सबके आगे चुप रहिए।  
अजी चुप रहिए, हाँ चुप रहिए। हम उस धरती के लड़के हैं ...

बातों का जनाब, शऊर नहीं, शेखी न बघारें, हाँ चुप रहिए।  
हम उस धरती की लड़की हैं, जिस धरती की बातें क्या कहिए।

अजी क्या कहिए, हाँ क्या कहिए।

जिस मिट्टी में लक्ष्मीबाई जी, जन्मी थीं झाँसी की रानी।

रजिया सुलताना, दुर्गावती, जो खूब लड़ी थीं मर्दानी।

जन्मी थी बीबी चाँद जहाँ, पद्मिनी के जौहर की ज्वाला।

सीता, सावित्री की धरती, जन्मी ऐसी-ऐसी बाला।

गर डींग जनाब उड़ाएँगे, तो मजबूरन ताने सहिए, ताने सहिए, ताने सहिए।

हम उस धरती की लड़की हैं...

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में।

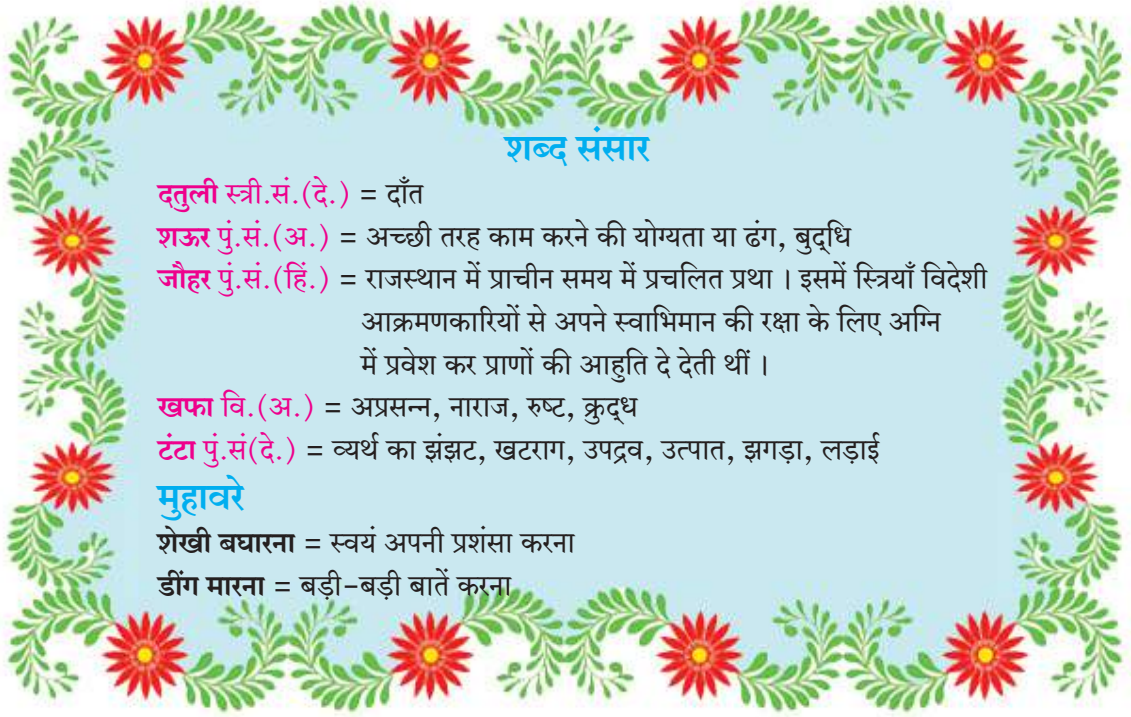
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें।

झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझा के।

बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के।

भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये।

हम उस धरती की संतति हैं ....



### स्वाध्याय

\* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) वर्गीकरण कीजिए :

पद्यांश में उल्लिखित चरित्र-ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, लक्ष्मीबाई, रजिया सुलताना, दुर्गावती, पद्मिनी, सीता, चाँदबीबी, सावित्री, जयमल

ऐतिहासिक	पौराणिक

(२) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए :

- भारत माता के रथ के दो पहिये - .....
- खूब लड़ने वाली मर्दानी - .....
- अपनी लगन का सच्चा - .....
- किसी को कुछ न गिनने वाले - .....

(३) सही/गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके वाक्य पुनः लिखिए :

- रानी कर्मवती ने अकबर को राखी भेजी थी।
- भरत शेर के दाँत गिनते थे।
- झगड़ने से सब कुछ प्राप्त होता है।
- ध्रुव आकाश में खेले थे।

(४) कविता से प्राप्त संदेश लिखिए।

